**Dr• Manoj Kumar Singh**
**Assistant Professor**
**P.G.Deptt.of Psychology**
**Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh college Ara**
**Date; 20/02/2026**
**Class: U.G Semester - 4th**
**(MJC-5)**
**Abnormal Psychology,**
**Topic -**

<u>नव फ्रायडवादी मॉडल / नवीन मनोगतिकी संदर्भ</u> **<u>(Neo-Freudian Model/Newer Psychodynamic Perspective)</u>**

नव फ्रायडवादी मॉडल के समर्थकों में अन्ना फ्रायड, करेन हार्नी, सुलीवान, ऑटो रैंक एवं एरिक फ्रोम आदि के नाम शामिल है। जैसा कि हमने देखा कि फ्रायड ने असामान्य व्यवहार की व्याख्या में मूलतः उपाहं की इच्छाओं एवं आवेगों तथा उनकी अभिव्यक्ति पर बल दिया है। परन्तु बाद में नव फ्रायडवादियों ने अहं को अधिक महत्त्वपूर्ण बतलाते हुए यह कहा है कि अहं द्वारा व्यक्तित्व के कार्यपालक के रूप में कार्य करने के तरीके पर भी व्यक्ति में कुसमायोजी व्यवहार उत्पन्न होने की सम्भावना निर्भर करता है। नव फ्रायडवादियों के इस दृष्टिकोण को ईगो मनोविज्ञान कहा गया, इसकी अगुवाई अन्ना फ्रायड ने की।

परम्परावादी मनोगतिकी मॉडल एवं नय फ्रायडवादी मॉडल के मध्य दूसरा महत्त्वपूर्ण तथा विचारणीय तथ्य प्रतिबल (Stress) एवं चिन्ता (Anxiety) से सम्बन्धित हैं। फ्रायड ने जहाँ प्रतिबल एवं चिन्ता का आधार जैविक आवश्यकताओं से उत्पन्न द्वन्द्व को माना है वहीं नव फ्रायडवादियों ने वैयक्तिक या अन्तरवैयक्तिक द्वन्द्वों (Personal or Interpersonal Conflicts) को प्रतिबल एवं चिन्ता का आधार माना। इस सम्बन्ध में एडलर महोदय कहते है कि चिन्ता, हीनता के भाव से उत्पन्न होती है। व्यक्ति हीनता के भावों की क्षतिपूर्ति के लिए लम्बे समय तक प्रयास करता है। इस सम्बन्ध में करेन हार्नी ने भी स्पष्ट रूप से कहा कि चिन्ता, आधिपत्य आदि से सम्बन्धित समस्याओं से उत्पन्न होती है। इन्होंने फ्रायड का विरोध कर कहा कि महिला में हीनता के भाव का आधार शिश्न स्पर्धा नहीं बल्कि उनकी भूमिका है जो संस्कृति द्वारा उन्हें दी जाती है। परम्परावादी मनोगतिकी मॉडल में जहाँ यौन पर अधिक बल दिया गया है तथा यौन इच्छा से उत्पन्न द्वन्द्व को प्रतिबल एवं चिन्ता का वास्तविक कारण बताया है वहीं नव फ्रायडवादी मॉडल में चिन्ता का वास्तविक आधार सामाजिक-सांस्कृतिक एवं आर्थिक समस्याओं से उत्पन्न द्वन्द्व को माना गया।

आधुनिक नैदानिक मनोविज्ञानियों एवं मनश्चिकित्सकों ने अहं तथा पराहं किसी पर भी बल नहीं दिया है बल्कि उस वस्तु पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया है जिसके प्रति व्यक्ति पराह एवं अहं की इच्छाओं एवं आवेगों को निर्देशित किया है तथा उसे अपने व्यक्तित्व में शामिल कर लेता है। इस प्रक्रिया को इन्होंने इन्ट्रोजेक्सन कहा है। इन्द्रोजेक्सन एक ऐसी आंतरिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बच्चे स्मृति तथा प्रतिमाओं के द्वारा सांकेतिक रूप से किसी व्यक्ति को किसी संवेग से युक्त मानता है। उदाहरण के लिए कोई बच्चा अपने माता-पिता के क्रोधित चेहरे को आन्तरीकरण कर सकता है तत्पश्चात् उस संकेत या वस्तु से उसका व्यवहार प्रभावित होता है। मनोगतिकी चिंतन में वस्तु सम्बन्धी आरंभिक बल पर अत्यधिक बल दिया गया है और कहा गया कि आंतरीकृत वस्तु के परस्पर विरोधी गुण, जैसे- वस्तु उत्तेजक एवं आकर्षक या कुंठा उत्पन्न करने वाला हो सकता है जिससे वैमनस्यपन्न हो सकता है। इतना ही नहीं, ऐसी वस्तुएँ व्यक्तित्व के केन्द्रीय अहं सेएक होकर स्वतंत्र अस्तित्व भी बना सकती हैं। इन सबका परिणाम यह होता है कि इससे तित्व में आंतरिक संघर्ष होता है तथा उसमें धीरे-धीरे कुसमायोजी व्यवहार उत्पन्न होने लगता है। वर्तमान अमेरिकन मनोवैज्ञानिकों मेहलर (Mahler) तथा कर्नवर्ग (Kernberg) ने से उपर्युक्त दृष्टिकोण की प्रशंसा की है। कर्नवर्ग को विशेष रूप से सीमारेखीय व्यक्तित्व हे

अध्ययन के लिए जाना जाता हैं। ऐसे व्यक्तित्व का सबसे प्रमुख गुण अस्थिरता होता है। इनके अस्थिरता का कारण यह है कि इस व्यक्तित्व के आंतरीकृत वस्तु रोगात्मक होते है और साथ-ही-साथ व्यक्ति उसे एकीकृत करने में असफल भी होता है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि नया मनोगतिकी संदर्भ मूलतः व्यक्ति के अन्तरवैयक्तिक सम्बन्ध **(Interpersonal Relationship)** पर अधिक बल देता है तथा विशेष रूप से इस बात की व्याख्या करता है कि किस तरह से ऐसे आरम्भिक सम्बन्धों से व्यक्ति द्वारा संतोषजनक अंतक्रिया करने की क्षमता प्रभावित होती है।